ISSN 2319-8095
PROGRESSIVE RESEARCH JOURNAL
VOL 9 No 01 Dec 2016

सेवा कालीन बी0एड0 प्राध्यापको का प्रशिक्षण : समस्या एवं समाधान

* डा0.अरूण कुमार सिंह

मावन सभ्यता का प्रथम सोपान समाज है इसी का विकसित एवं परिष्कृत रूप राष्ट्र है। समाज की उन्नित एवं उद्भव के लिए सतत् मार्गदर्शन संस्करण एवं नवीकरण की आवश्यकता होती है। ऐसा ना होने से वह पतनोन्मुखी हो जाती है, पिछड़ जाती है, तथा समय के गति के साथ उसमे अनेक विकृतियां उत्पन्न हो जाती है,और घुन बनकर समाज के ढॉचे को नष्ट कर देता है। फलस्वरूप राष्ट्र के अस्तित्व पर ही प्रश्नवाचक चिन्ह लग जाता है। यह एक स्वाभाविक प्रकिया है।

भारत में सामाजिक व्यवस्था के समुचित संचालन के लिए प्राचीन काल में शिक्षण एवं प्रशिक्षण की सुदृढ़ व्यवस्था थी क्योंकि यही एक ऐसा माध्यम है जो समाज एव राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए मार्ग दर्शन पाथेय एवं सम्बल प्रदान कर सकता है। उस समय औपचारिक शिक्षा गुरूकुलो में ऋषियों–मुनियों द्वारा सभी वर्गो के शिष्यों को समभाव एवं निष्पक्षतापूर्ण ढ़ंग से दी जाती थी। गरीब–अमीर,राजा–रंक सभी के बच्चे गुरूकुल में अध्ययन के मान दण्ड थे।

बी0एड0 प्राध्यापकों के प्रशिक्षण का अर्थ सेवाकालीन शिक्षकों के विकास से है। निसंदेह किसी देश में बी0एड0 प्राध्यापकों के प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि वे देश के लिए भावी शिक्षकों को तैयार करते हैं। अतः शिक्षा का स्तर सुधारने हेतु सर्व प्रथम शिक्षकों के लिए श्रेष्ठ व्यावसायिक शैक्षिक कार्यकमों को आरम्भ करना आवश्यक है। कोठारी आयोग की अनुशंसा में लिखा है कि शिक्षक–शिक्षा का सारतत्व उसके कार्यकम की गुणता है इसके अभाव मे न सिर्फ शिक्षक–शिक्षा की क्षति होती है,अपितु यह शिक्षा के सभी स्तरों में गिरावट का कारण बन जाता है अतः शिक्षक–शिक्षा की गुणता उसके पाठ्यकम पर आधारित होती है। पाठ्यकम को समय–समय पर बदले सामाजिक परिदृष्य के अनुकूल परिवर्तित होते रहना आवश्यक है।

शिक्षकों का प्रभावी कार्य मुख्यरूप से इस बात पर निर्भर करता है,कि कार्य करते हुए उन्हें किन परिस्थितियों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसका मतलब यह है कि शिक्षक कार्य करते हुए सीखता है सेवारत शिक्षकों को कक्षा में नई–नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और उन चुनौतियों एवं परिस्थितियों के फलस्वरूप व अपने में नई क्षमताओं एवं कौशल का विकास करता है। यह कार्य वास्तविक सेवा के पूर्व सम्भव नहीं है चाहे उसका सेवा पूर्व प्रशिक्षण कितना ही अच्छा क्यों न रहा हो।

---

* पूर्व अध्यक्ष,बी0एड0 विभाग एम0एल0के0पी0जी0कालेज ,बलरामपुर
संकायाध्यक्ष-(शिक्षा संकाय) सिद्वार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर(उ0प्र0)

Scanned with OKEN Scanner

सेवाकालीन अध्यापकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था काफी पहले स्वीकार तो की गयी इस सम्बन्ध मे समुचित कार्यवाही स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही प्रारम्भ हुई। 1953 में माध्यमिक शिक्षा सेवा आयोग नें पहली बार यह बात कही कि,चाहे सेवा पूर्ण का प्रशिक्षण कितना भी उत्तम क्यों न हो,वह अपने आप में उत्तम अध्यापक को तैयार नहीं कर सकता। वह ज्ञान,कौशल ओर अभिव्यतियों उत्पन्न कर अध्यापक को इस योग्य बनाता है कि वह आत्मविश्वास और कुछ पूर्व अनुभव के आधार पर अपना कार्य प्रारम्भ कर सके।

सेवारत प्रशिक्षण के क्षेत्र में सबसे पहला व्यवस्थित प्रयास 1955 में हुआ,जब अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद की स्थापना की गयी और 24 शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सेवा प्रसार विभाग आरम्भ हुए। सन् 1962 में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में भी 30 सेवा प्रसार विभाग खोले गये तथा बाद मे इनकी संख्या और बढ़ गयी। माध्यमिक और प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता तो अनुभव की गयी किन्तु सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण पर कोई ध्यान नही दिया गया। वर्तमान मे कुछ संस्थाएं यह कार्य कर रही हैं किन्तु वे पर्याप्त नहीं हैं।

सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के उद्देश्य–

एन0सी0ई0 आर0टी0 ने प्रो0 जे0के0 शुक्ला के संयोजकता में सेवारत शिक्षक प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के बारे मे एक समिति का गठन किया। समिति ने अपने प्रतिवेदन मे सेवारत प्रशिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये–

1. शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रम उन्नत करने और शैक्षिक विकास के आयोजन में नेतृत्व करने में सहायता करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षकों के ज्ञान मे निरन्तर वृद्धि करना ताकि वे देश व विदेश में शिक्षा की प्रगति और अपने नये विषय से परिचित रहें।
3. शिक्षक प्रशिक्षकों को स्वाध्याय,स्वमनन के लिए प्रेरित करना।
4. शिक्षण प्रशिक्षण के क्षेत्र में प्रचलित विधियों के विश्लेषण और नई पद्धतियां आरम्भ करने में सहायता करना ताकि नयी पीढ़ी के योग्य अध्यापक तैयार हो सके।
5. शिक्षक प्रशिक्षक को पुरानी अनुपयोगी पद्धतियां छोड़ने और नयी वैज्ञानिक पद्धतियों व विचार ग्रहण करने की ओर अग्रसर किया।
6. शिक्षक समस्याओं को हल करने के लिए सहयोगी वातावरण तैयार करना और शिक्षक प्रशिक्षकों अपने क्षेत्र मे अनुसंधान के लिए प्रेरित करना।
7. शिक्षक प्रशिक्षकों में सही अभिवृति का विकास करना ताकि राष्ट्रीय विकास का वृहद कार्य योग्यता पूर्वक निभा सके।

सेवारत शिक्षक–प्रशिक्षण की समस्याएं–

1. **व्यवस्थागत समस्या**–प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनाओं में इसकी कोई अलग से व्यवस्था नहीं थी। वास्तव में इसकी आवश्यकता भी बहुत देर से महसूस किया गया। इस कारण

Scanned with OKEN Scanner

आयोजित करने की व्यवस्थित प्रणाली का प्रादुर्भाव नहीं हुआ और न ही इसे नियमित रूप से आयोजित करने के लिए किसी भी स्तर पर संस्था की स्थापना की गयी। राष्ट्रीय स्तर पर एन०सी० ई० आर०टी० सेवारत प्रशिक्षण का कार्य करती है परन्तु शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या उनकी योग्यता और नित नये परिवर्तनों को ध्यान मे रखते हुए वर्तमान व्यवस्था बिल्कुल ही अपर्याप्त है। यह अनुभव किया जा रहा है कि शिक्षको के अच्छे सेवारत प्रशिक्षण की नितान्त आवश्यकता है तथा उनकी योग्यता में वृद्धि करना सबसे प्रथम कार्य है। इसे सुचारू रूप से कियान्वित करने के लिए पंचवर्षीय योजनाओ मे व्यय करने की व्यवस्था होनी चाहिए।

माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए कुछ ग्रीष्म कालीन संस्थाओं का कार्य गोष्ठियों के अतिरिक्त कोई सुविचारित व सुनियोजित व्यवस्था नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि इस सम्बन्ध मे कोई योजना बनायी जाय और ऐसी नियमित व्यवस्था की जाये कि प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षक को प्रत्येक 5 वर्ष में दो तीन माह ऐसे कार्यक्रम में बिताने का अवसर मिले।

2. कार्यक्रमों के चयन की समस्या– जैसा कि स्पष्ट हो गया है कि सेवारत शिक्षक प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण की कोई समुचित व्यवस्था अभी तक नहीं हो पायी है। किन्तु जो थोड़ी बहुत व्यवस्था हुयी भी है उनके कार्यक्रमों के चयन में क्षेत्र की आवश्यकताओं का ध्यान नहीं रखा जाता है। केवल आयोजित करने वालों कीं सुविधानुसार विषयों का चुनाव कर लिया जाता है। जब विषय के चयन में भाग लेने वालों की समस्याओं पर ध्यान नहीं किया जाता है तो स्वाभाविक सी बात है कि उनके कार्यक्रमों में उनकी कोई रूचि नहीं होती। प्रोफेसर एच० बी० मजूमदार ने उस समस्याओं के निवारण के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये है–

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षकों की योग्यता उनकी समस्याएँ और उनके द्वारा कमी अनुभव किए जाने वाले क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया जाए।
2. वर्तमान कार्यक्रमों का इस दृष्टि से विश्लेषण किया जाय कि वे शिक्षक प्रशिक्षकों की आवश्यकता की पूर्ति किस सीमा तक करते है।
3. उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर नये पाठयक्रमों का निर्माण किया जाय।
4. नये पाठयक्रमों के आधार पर प्रयोगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाय तथा उनका मूल्यांकन करके आवयश्कतानुसार संशोधन एवं परिवर्तन करके पुनः उसे लागू किया जाय।
5. उन कार्यक्रमो पर प्रत्येक 5 वर्ष पर पुनर्विचार किया जाय।

3. शिक्षक प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण की अवधि की समस्या–सामान्यतः ऐसे कार्यक्रम दो प्रकार के होते हैं –

1. अल्पकालिक 2. दीर्घकालिक

लोगों का विचार है कि अल्पकालिक कार्यक्रम कम अवधि की होने के कारण प्रशिक्षकों पर उसका कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता और वे लाभन्वित नहीं हो पाते हैं। अतः कार्यक्रम लम्बी अवधि के होने चाहिए जिससे वे नई संकल्पनाओं एवं कुशलताओं को ग्रहण कर सकें।

Scanned with OKEN Scanner

कुछ लोगों का विचार है कि अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षक जो अधिक आयु के होते है जिनके सामने पारिवारिक कठिनाईयाँ होती हैं वे लम्बी अवधि के कार्यक्रमों में भाग नही ले है। ऐसे प्रशिक्षकों के लिए अल्पकालिक व्यवस्था से उनकी समस्याओं का समाधान भी सीमा तक हो सकेगा।

4. प्रशिक्षण का समय– ऐसे प्रशिक्षण का समय और महाविद्यालयों के कार्यक्रमो में साम स्थापित किया जाना बहुत आवश्यक है यदि इस पर ध्यान नही दिया जायेगा तो ये कार्य सफलता को प्राप्त नहीं कर पायेंगे क्योंकि बहुत से शिक्षक प्रशिक्षकों को उनके संस्था मुक्त ही नहीं किया जायेगा। अतः आवश्यकता इस बात की है कि इन कार्यक्रमो की यो सत्र के पूर्व में ही बना कर प्रतिभागियों एवं संस्थाध्यक्षो को सत्र के प्रारम्भ में ही भेज दिये जिससे कि वे संस्था का कार्यक्रम उसी अनुसार बना सके।

5. प्रतिभागी– प्रायः ऐसा देखा जाता है कि प्रतिभागियों का चुनाव सही ढ़ंग से नही हो है। ऐसे कार्यक्रमो में कुछ ही व्यक्ति बार–बार बुलाये जाते है या संस्था प्रमुख द्वारा भेजे हैं। इस प्रकार ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने वाले क्षेत्र के समस्त शिक्षक प्रशिक्षक की यो क्षमता व समस्याओ से परिचित हों और कार्यक्रम के उद्देश्यों को सही ढंग से प्राप्त किया सके।

6. प्रशिक्षण देने वाले व्यक्तियो के चुनाव की समस्या– ऐसे कार्यक्रमों में प्रायः देखा जात कि प्रशिक्षण देने के लिए जिन व्यक्तियों को बुलाया जाता है वे काफी उम्र के एवं अनुभवी है परन्तु इनमें से बहुत कम ऐसे होते है जो प्रतिभागियो को अपने ज्ञान एवं उच्च योग्यत प्रभावित कर पाते हैं। प्रायःउच्च पदों पर आसीन लोगों को ही प्रशिक्षण देने के लिए बु जाता हैं। कोई जरूरी नही कि उच्च पद पर बैठने वाला व्यक्ति अच्छी योग्यता वाला ही अतः प्रशिक्षण देने वाला व्यक्तियो के चयन में उच्च पद नही बल्कि उच्च योग्यता को माप बनाया जाना चाहिए। जब तक संदर्भ व्यक्ति अपने क्षेत्र मे निष्णात और प्रतिभागियों की जिज्ञासा को शान्त करने मे सक्षम नहीं होंगे तब तक प्रशिक्षण कार्यक्रम मात्र खाना पूर्ति रहेगा तथा उससे उद्देश्यों की सफलता संदिग्ध बनी रहेगी।

सुझाव–

1. शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देते समय इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहि कि प्राप्त प्रशिक्षण का लाभ क्षेत्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हो ।
2. शिक्षक प्रशिक्षको के लिए नवीन ज्ञान,शिक्षण कौशल,शिक्षक–तकनीकी,नवीन,उपकरण संचालन संम्बन्धी विषयों पर समय–समय पर विचार गोष्ठियां आयोजित की जाय।
3. नवीन विषयो पर अभिनव पाठयक्रम संचालित किये जायें।

Scanned with OKEN Scanner

4. अपने व्यवसाय के प्रति अपेक्षित दायित्व एवं मूल्य बोध विकसित करने हेतु व्यवसायिक सम्मेलन आयोजित किये जाये।
5. कार्यशालाओं में व्यवसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था किया जाय।
6. सामाजिक किया कलापो में शिक्षक प्रशिक्षको की भागीदरी सुनिश्चित किया जाय।
7. उपर्युक्त कार्यक्रमों पर होने वाला सम्पूर्ण व्यय सरकार वहन करें।
8. उपयुक्त कार्यक्रमों मे प्रत्येक संस्था के रूप मे कम से कम दो प्राध्यापकों की भागीदारी अनिवार्य होनी चाहिए तथा उन्हें सम्पूर्ण संसाधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए ताकि अपने संस्था के अन्य प्रधानाध्यापकों को प्रशिक्षित कर सके । तभी प्रशिक्षण के उद्देश्य की प्राप्ति सम्भव हो सकेगी।

अध्यापक शिक्षा सभी स्तर की शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग होती है। यह समाज का राष्ट्र के चरित्र उसकी संस्कृति एवं लोकाचार से घनिष्ट रूप से जुड़ी होती हैं। इक्कीसवीं सदीं के विशेष परिप्रेक्ष्य में संवैधानिक लक्ष्यों, राज्य नीति निर्देशक सिद्वान्तों सामाजिक आर्थिक समस्याओं, नई आकांक्षाओं के मद्देनजर भावी शिक्षा व्यवस्था को उपयुक्तता प्रदान करने की आवश्यकता है। अतः अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों को एक नवीन परिप्रेक्ष्य में रखते हुए उसे सार्थक भूमिका निर्वहन की जिम्मेदारी निभानी होगी ताकि आज की शिक्षा प्रकियाओं में व्याप्त दोषों एवं कृत्रिमताओं पर रोक लगा सके और हम देश को एक सशक्त कल्पनाशील एवं प्रभावकारी शिक्षा व्यवस्था दे सकें। अभी तक हमारी शिक्षा समाज की आवश्यकताओं से नही जुड़ सकी है तथा हम शिक्षकों में अपेक्षित दायित्व एवं मूल्य बोध विकसित नही कर सके है। हमारी शिक्षा स्वावलम्बन के स्थान पर परावलम्बन को ही बढ़ावा दे रही हैं चाहे वह सामान्य शिक्षा हो या अध्यापक शिक्षा।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. Committee on plan project,Report on tracher training,Govt.of India
2. Chaurasia,G.New Ear in Tracher Educhion sterling Publisher 1967
3. deve,R.H.: ToWards. a theory Of educational rxtenison reading in service Education Vallabh Vidyanagar Sarda Patel university 1968
4. IATE ,Inservice eduction for teacher educations Delhi1998
5. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद,गुणात्मक विद्यालय शिक्षा हेतु दक्षता आधारित व प्रतिबद्धता उन्मुख अध्यापक शिक्षा(सेवाकालीन)1998
6. NCTE: Empowering teacher Education 2015
7. जोशी,दिनेश चन्द्र एवं मेहता चतुर सिंहः शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्वान्त और समस्याएं,राजस्थान ग्रन्थ अकादमी,जयपुर 2007

Scanned with OKEN Scanner